रमेश शर्मा

दोहे पर्यावरण पर

धँसती है धरती कहीं, .कहीं बाढ की पीर ।
समझेगा कब आदमी, कुदरत की तासीर ।।

सोचो समझो बात को, काम करो ये नेक ।
नया लगाओ पेड़ तुम, मानसून मे एक ।।

कोलतार सीमेंट के,. बिछे अगर हैं जाल ।
हरियाली कैसे रखे,खुद को वहां सँभाल ।।

जंगल के जंगल दिए,... हमने अगर दबोच ।
बारिश होगी किस तरह ,एक बार तो सोच ।।

दिया प्रदूषण पर नही,अगर किसी ने ध्यान ।
आने वाली सब हवा , ...खतरे में लो जान ।।

जमकर करें विरोध सब,रहें नही चुपचाप ।
करें प्रदूषण आज वो, बन जाएँ कल शाप ।।

दूषित है जलवायु अब,....सूखे कई प्रदेश ।
चलो लगायें बाग हम,मिलकर सभी रमेश ।।

हरियाली गायब हुई,.....सूख गये उद्यान ।
और करो खिलवाड तुम,कुदरत से इन्सान ।।

काटे वृक्ष तमाम जब,हुआ नही अहसास ।
कड़ी धूप में छाँव की, करे आज तू आस ।।

जंगल के जंगल दिए, हमने अगर दबोच ।
बारिश होगी किस तरह ,एक बार तो सोच ।।

जमकर करें विरोध सब,रहें नही चुपचाप ।
काटे गए पहाड़ तो, बन जाए कल शाप ।।

सुनी नहीं चेतावनी ,किया नज़र अंदाज़ ।
कुदरत की गिरती रहे ,इसीलिये तो गाज़ ।।

बादल फटने लग गये ,. .....धंसने लगे पहाड़ ।
बन्द करो अब भी मनुज ,कुदरत से खिलवाड़ ।।